IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 6, March 2026
Impact Factor: 8.2

जैविक खेती से अनुसूचित जनजातिय कृशकों की आर्थिक स्थिति का अध्ययन

(बाग विकासखण्ड के विशेष संदर्भ में)

डॉ. देवेन्द्र मुझाल्दा

आचार्य एवं विभागाध्यक्ष

भूगोल विभाग

माधव विश्वविद्यालय, पिण्डवाड़ा, (सिरोही) राजस्थान

प्रस्तावनाः– *जैविक खेती से अनुसूचित जनजातीयों के कृशकों की आर्थिक स्थिति में अधिकतर क्षेत्रों सिंचाई की सुविधओं से भुमि उपयोग का काफी बड़ा योग है। चाहे वे मैदानी क्षेत्रों में कृशि भूमि हो या ग्रामीण क्षेत्रों के पहाड़ी हिस्सों में हो। जैविक खेती से मानव की समृद्धि कृशि भूमि के उपयोग पर आश्रित है कृशि भूमि के लिए मिट्टी के प्रकार उच्चावच, जलवायु द ाएँ, सिंचाई के लिए समय–समय पर जल की पूर्ति पर ही आश्रित है। जैविक खेती के लिए कृशकों को समय–समय पर आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए तापमान, वर्शा, आदृता की समतुल्यता बनी रहनी चाहिए, यदि क्षेत्र में कुछ बदलाव आता है उस स्थिति में कृशि कार्य से उत्पादन नही के बराबर मिल पाता है आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए सभी तत्वों का समायोजन होना चाहिए ताकी विकास हो सके।*

जैविक खेती से कृशकों को उत्पादन में वृद्धि, तो उस स्थिति में जो वृद्धि हुई है वह कहॉ तकसत्य है इसके साथ ही उत्पादित फसलों में विक्रय करने की जानकारी, फसल कटाई के साधन, जैविक खेती के अतिरिक्त अन्य व्यवसायों को एक प्राथमिक ऑकडों को संकलित कर परिणाम तक जाने का प्रयास किया जो तालिकाओं के द्वारा प्रस्तुत किये है।

Keywords: "जैविक खेती से अनुसूचित जनजातिय कृशकों की आर्थिक स्थिति का अध्ययन"

प्रस्तावनाः–

जैविक खेती से अनुसूचित जनजातीयों के कृशकों की आर्थिक स्थिति में अधिकतर क्षेत्रों सिंचाई की सुविधओं से भुमि उपयोग का काफी बड़ा योग है। चाहे वे मैदानी क्षेत्रों में कृशि भूमि हो या ग्रामीण क्षेत्रों के पहाड़ी हिस्सों में हो। जैविक खेती से मानव की समृद्धि कृशि भूमि के उपयोग पर आश्रित है कृशि भूमि के लिए मिट्टी के प्रकार उच्चावच, जलवायु द ाएँ, सिंचाई के लिए समय–समय पर जल की पूर्ति पर ही आश्रित है। जैविक खेती के लिए कृशकों को समय–समय पर आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए तापमान, वर्शा, आदृता की समतुल्यता बनी रहनी चाहिए, यदि क्षेत्र में कुछ बदलाव आता है उस स्थिति में कृशि कार्य से उत्पादन नही के बराबर मिल पाता है आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए सभी तत्वों का समायोजन होना चाहिए ताकी विकास हो सके।

जैविक खेती से कृशकों को उत्पादन में वृद्धि, तो उस स्थिति में जो वृद्धि हुई है वह कहॉ तकसत्य है इसके साथ ही उत्पादित फसलों में विक्रय करने की जानकारी, फसल कटाई के साधन, जैविक खेती के अतिरिक्त अन्य व्यवसायों को एक प्राथमिक ऑकडों को संकलित कर परिणाम तक जाने का प्रयास किया जो तालिकाओं के द्वारा प्रस्तुत किये है।

जैविक पर्यावरणीय मुद्देः–

जैविक खेती एक महत्वपूर्ण प्राकृतिक जीव चक्र, जीवंत पर्यावरणीय जीव चक्र व उनके संधारण के सिद्धांत पर आधारित है। जैविक खेती में सम्पूर्ण कृशि उत्पादन पद्धति, प्राकृतिक प्रक्रियाओं पर निर्भर रहते है। प्रत्येक जीव के जीवीत रहने के लिए एवं उनके भरण–पोशण एवं उत्पादन प्रक्रिया के पर्यावरण के

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 6, March 2026
Impact Factor: 8.2

साथ सामंजस्य स्थापित करने के लिए पर्यावरणीय मुद्दों पर जोर देकर उत्पादन की प्रक्रिया में बड़ा योगदान दिया है जो कि तालिकाओं के द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

तालिका क्र. 1

उत्तरदाताओं को जैविक खेती से उत्पादित फसल विपणन

क्रमांक	विवरण	संख्या	प्रतिशत
1.	विपणन संस्था से	20	50.0
2.	व्यापारी से	07	17.5
3.	स्वयं से	13	32.5
	कुल	**40**	**100.00**

स्त्रोतः– प्राथमिक आंकड़ो के आधार पर।

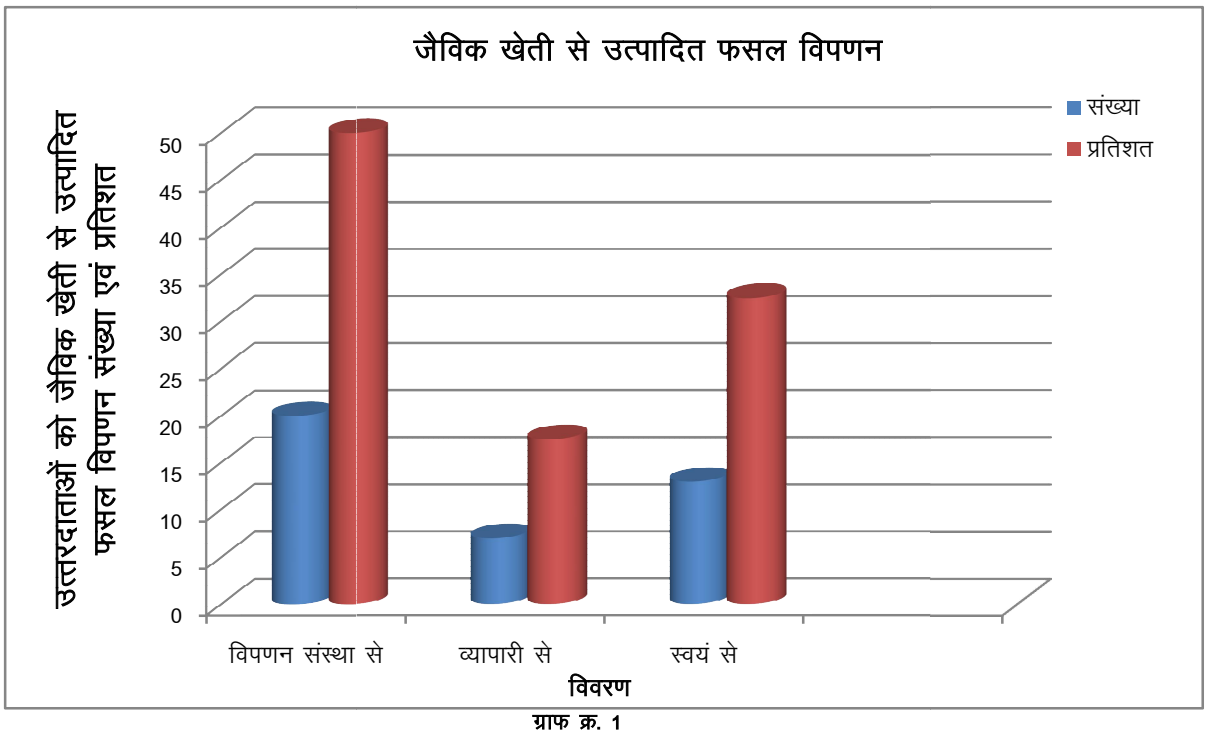

ग्राफ क्र. 1

तालिका क्र. 1 से स्पश्ट होता है कि उत्तरदाताओं को जैविक खेती से उत्पादित फसल विपणन के विवरणों में विपणन संस्था जिनकी संख्या 20 है और उनका प्रति ात 50.0 है जबकि व्यापारीयों की संख्या 07 है जिनका प्रति ात 17.5 है और स्वयं से जिनकी संख्या 13 है, जिनका प्रति ात 32.5 है अतः निश्कर्श रूप में यह कहा जा सकता है कि जैविक खेती से प्राप्त विपणन व्यवस्था में अधिकतर विपणन संस्था से कृशक लाभ उठाते है जो कि विकास का एक प्रतिक है।

तालिका क्र. 2

उत्तरदाताओं को विक्रय करने की जानकारी

क्रमांक	विवरण	संख्या	प्रतिशत
1.	कृशि अधिकारी से	30	75.0

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 6, March 2026
Impact Factor: 8.2

2.	व्यापारी से	01	2.5
3.	कृशि विज्ञान केन्द्र से	02	5.0
4.	कृशक से	07	17.5
	कुल	**40**	**100.00**

स्त्रोतः– प्राथमिक आंकड़ो के आधार पर।

तालिका क्र. 2 से स्पश्ट है कि सर्वेक्षित उत्तरदाताओं को जैविक खेती से प्राप्त विक्रय करने के संबन्ध में जानकारी को एकत्रित करने में कृशि अधिकारी से जानकारी प्राप्त करने की संख्या 30 है जिनका प्रति ात 75.0 है। व्यापारी से जानकारी प्राप्त की संख्या 01 है जिनका प्रति ात 5.0 है एवं कृशकों से प्राप्त जानकारी की संख्या 07 है, जिनका प्रति ात 17.5 है।

अतः निश्कर्शरूप में यह कहा जा सकता है कि जैविक खेती से प्राप्त फसलों का विक्रय करने की संख्या में सबसे अधिक कृशि अधिकारी ये जानकारी लेते है जो कि विकास का प्रतिक है।

तालिका क्र. 3

उत्तरदाताओं द्वारा जैविक फसल कटाई के साधन

क्रमांक	विवरण	संख्या	प्रतिशत
1.	हासिये से	40	100.0
2.	मशीन से	0	0.0
	कुल	**40**	**100.00**

स्त्रोतः– प्राथमिक आंकड़ो के आधार पर।

उपर्युक्त तालिका क्र. 3 से स्पश्ट होता है कि जैविक खेती से प्राप्त फसलों को कृशक परिवार कटाई करते है उसमें हासिये से काटने की संख्या 40 है जिनका प्रति ात 100 % है, एवं म ाीनों से कटाई करने की संख्या 0.0है जिनका प्रति ात 0.0 है

अतः निश्कर्श रूप में यह कहा जा सकता है कि जैविक खेती से कटाई करने में आज भी हासिये (दराते) से करते है जो कि धरातलिय स्वरूप प्रभावित करते है।

तालिका क्र. 4

जैविक खेती के अलावा अन्य व्यवसाय

क्रमांक	विवरण	संख्या	प्रतिशत
1.	कृशि कार्य	29	72.5
2.	प ुपालन	10	25.0
3.	दूध डेयरी	1	2.5
	कुल	**40**	**100.00**

स्त्रोतः– प्राथमिक आंकड़ो के आधार पर।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 6, March 2026
Impact Factor: 8.2

ग्राफ क्र. 4

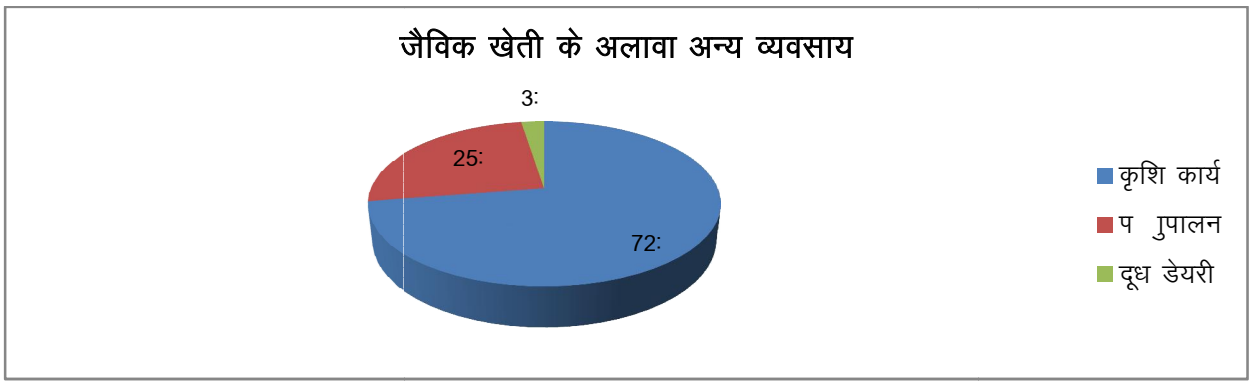

उपर्युक्त तालिका क्र. 4 से स्पश्ट होता है कि सर्वेक्षित क्षेत्र में जैविक खेती के अतिरिक्त अन्य व्यवसाय में कृशि कार्य से उत्पादन करने वालों की संख्या 29 है जिनका प्रति ात 72.5 है, प ुपालन करने वालों की संख्या 10 है जिनका प्रति ात 25.5 है, एवं दुध डेयरी वालों की संख्या 02 है जिनका 5.0 प्रतिशत है एवं कृशक से ही प्राप्त जानकारी वाले उत्तरदाताओं की संख्या 07 है जिनका 17.5 प्रति ात है

अतः निश्कर्श रूप में यह कहा जा सकता है कि जैविक खेती के अंतर्गत विक्रय करने की जानकारी सबसे अधिक कृशि अधिकारी से लेते है जिनकी संख्या अधिक है जबकि वर्तमान समय में व्यापारीयों से कम जानकारी लेते है जो कि एक विकास का प्रतिक है।

निश्कर्शः–

निश्कर्श में यह कहा जा सकता है कि जैविक खेती से अनुसूचित जनजातियों की आर्थिक स्थिति के अध्ययन में मध्यप्रदेश के धार जिले बाग विकासखण्ड में जैविक खेती से उत्पादित फसलों में विपणन से सबसे अधिक प्रति ात रहा है एवं विक्रय करने की जानकारी में कृशि अधिकारी से सबसे अधिक रहा है एवं कटाई के साधनों में और अन्य व्यवसायों में उत्तरदाताओं को अधिक लाभ मिला है जो कि एक विकास का कारण है जैविक खेती से कृशक परिवारों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है जिसके लिए जैविक खेती को अधिक से अधिक कृशक अपनाकर आर्थिक स्थिति में सुधार लाया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :–

1. डॉ. चन्द्र प्रका ा भुक्ल (2015) जैविक खेतीपेज 29, पॉईन्टर पब्लिके ान, 807 व्यास बिल्डिंग चौडा रास्ता, जयपुर (राजस्थान)।
2. कुमार प्रमिला एवं श्री कमल भार्मा (1985) कृशि भूगोल मध्यप्रदे ा हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल।
3. पाण्डेय, रमे ा कुमार (नवम्बर 2000) ''ग्रामीण सहभागिता मुल्यांकन एवं नियोजन', योजना, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार संसद् मार्ग, नई दिल्ली 110001, वर्श 44, अंक–8, पृ. 30
4. भाटिया, पी.सी., ''वर्शा सिंचित कृशि : अनुसंधान और विकास परिप्रेक्ष्य योजना'', जनवरी 2001
5. मूँगालाल सुरेका (1996), ''ग्रामीण भारत की समस्याएँ एवं समाधान'', प्रिण्टवेल जयपुर
6. आहुजा, राम (2013) सामाजिक सर्वेक्षण एवं अनुसंधान, रावत पब्लिके ान, जयपुर, पृ. 45